किसी के भी भूतकाल की एक एक घटना देखना सम्भव है

फाक्स बहिनें, जो किसी के भी अतीत को--भूनकाल को पढ़ लेती है एक विशेष तन्त्र के माध्यम से --

भूतकाल को पढ़ लेना कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं रही है, विज्ञान के अनुसार हमारे जीवन में जो भी क्षण घटित होते है, वे सब समय-पटल पर पूर्ण रूप से अंकित हो जाते है। चाहे हम कितना ही छुपा कर काम करें परन्तु समय की नजरों से वह कार्य छुपा नहीं रह सकता। आवश्यकता इस बात की है, कि कोई ऐसी विधियां कोई ऐसी तरकीब खोजी जाय जिसके माध्यम से समय पटल को पहिचान सकें और उस पर अंकित घटनाओं को पढ़ सकें।

विदेशों में इस पर बहुत ज्यादा कार्य होने लगा है और पश्चिम के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये है, कि एक विशेष प्रयोग के माध्यम से किसी के भी भूतकाल को आसानी से जाना जा सकता है, पहिचाना जा सकता है, और समझा जा सकता है।

आज व्यक्ति दोहरे चरित्र का हो गया है, वह गोपनीय ढंग से कुछ अलग प्रकार के कार्य करता है और समाज में सार्वजनिक रूप से उसका व्यवहार और चरित्र कुछ अलग प्रकार का होता है। आम व्यक्ति उसके दोहरे चरित्र को भांप नहीं सकता, कौन व्यक्ति रात के अंधेरे में क्या करता है, इसके बारे में कोई पूरी जानकारी नहीं मिल सकती, और इस प्रकार से व्यक्ति का चरित्र और उसके कार्य दबे-छुपे रह जाते है।

मैंने देखा है, कि जो नेता नारी स्वतंत्रता के हिमायती होते हैं, वे ही घर में अपनी पत्नी पर अत्याचार करते रहते है, बाहर से उजले वस्त्र पहिनने वाले व्यक्ति अन्दर से चरित्र हीन देखे गये है। बाहर गरीबों के मसीहा बनने का ढोंग करने वाले स्वयं में पूर्ण रूप से अय्यासी होते है, इनके इस प्रकार के चरित्र को जानने का तरीका केवल इस साधना के द्वारा ही संभव है।

आप कल्पना करे, कि इस साधना को (विदेशों में साधना को "प्रयोग" शब्द से संबोधित किया जाता है) सम्पन्न करने पर नित्य नवीन तथ्य आपके सामने उजागर हो सकते हैं, जिस पत्नी को आप पवित्र कहते हुए नहीं थकते उसने शादी से पूर्व या शादी के बाद क्या क्या गुल खिलाये है, यह आप इस साधना से समझ है, आपकी पुत्री बिलम्ब से आने पर जो बहाने बनाती है वे बहाने कितने सही है, यह आप केवल इस साधना को सिद्ध कर के ही जान सकते है, आपका मित्र किस प्रकार के व्यक्तित्व का है, आप उसके साथ पार्टनर शिप में व्या-

पार कर रहे है, उसके मन में क्या बातें है, आपके पति किस चरित्र के है, आपका बेटा कहना क्यों नहीं मान रहा है, आदि ऐसी सैकड़ों उलझने और रहस्य है, जिन्हें हम और किसी भी तरीके से नहीं जान सकते, इन सबको जानने का केवल एक ही तरीका है, जो कि भूतकाल में झांक कर एक क्षण में ही कच्चा चिट्ठा खोल कर रख देती है।

आप स्वयं कल्पना करें, कि आप किसी अधिकारी से मिलने पर या किसी नेता के जीवन की गोपनीय घटनाएं लिख कर उनके सामने रख देने पर वह आपसे और आपके व्यक्तित्व से आपके ज्ञान और आपकी साधना से कितना अधिक प्रभावित हो जायेगा, यह आप अनुमान लगा सकते है, यही नहीं अपितु इसके बाद तो आपका किसी भी प्रकार का कोई भी कार्य सम्पन्न करने के लिए वह स्वयं ही तैयार रहेगा।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दिव्य है।

फाक्स बहिनें

इन दिनों पश्चिम में फाक्स बहिनों की धूम है, लोग उन्हें ऊंची रकम देकर अपने पास बुलाते है, और अपने विरोधियों के भूतकाल की घटनाओं को उनके द्वारा जान लेते है। अपने पति या पत्नी के चरित्र के बारे में फाक्स बहिनों के माध्यम से घटनाओं का आकलन कर लेते है।

फाक्स बहिने मूलतः लन्दन की रहने वाली है, परंतु स्वतन्त्रता से पूर्व उनके पिता भारत में अच्छे पद पर थे, और इन दोनों का जन्म भारत में ही हुआ था। बाद में यह परिवार लन्दन में जाकर बस गया।

फाक्स बहिनों को गूढ़ विद्याओं के बारे में बहुत अधिक रुचि थी, और इसी भावना की वजह से वे १९७४ में भारत आई और लगभग चार वर्षों तक जोशी मठ के एक आश्रम में रहीं, वहीं पर उनकी भेंट एक उच्चकोटि के योगी से हुई और ये बहिनें उस योगी से प्रभावित हो कर उनसे दीक्षा प्राप्त कर ली और उसके साथ ही रहने लगी।

वह योगी कई श्रेष्ठ विद्याओं और साधनाओं का जानकार था, उसने इन्हें श्रेष्ठ और उच्च कोटि की साधनाः—भूतकाल साधनाः—सम्पन्न करवा दी। और फाक्स बहिने कहती है, कि ज्यों ही साधना सम्पन्न की, उनके ललाट पर एक तीव्र प्रकाश सा अनुभव होने लगा कि जैसे दिमाग की खिड़कियां खुल गई हो और हजारों दृश्य स्मृति पटल पर उभरने लगे थे, फाक्स बहिने किसी भी व्यक्ति या स्त्री को देखती और मंत्र का एक या दो बार उच्चारण करती तो उसके भूतकाल की सारी घटनाएं कुछ ही सैकण्डों में वे उसी प्रकार से देख लेती, जिस प्रकार से हम टेलीविजन पर कोई दृश्य, घटना या कहानी देखते है।

इसके बाद फाक्स बहिने पुनः लन्दन चली गयी और आज वहां उनकी लोकप्रियता किसी भी अभिनेत्री या राजनीतिज्ञ से कम नहीं है। अमेरिका और लन्दन के उच्च कोटि के अखबारों ने उनकी जीवनी चित्रों के साथ छापी है, वैज्ञानिकों ने इन दोनों बहिनों पर कठोर परीक्षण कर स्वीकार किया है कि इनमें किसी प्रकार का कोई छल नहीं है, वास्तव में ही इन बहिनों के पास कोई अलौकिक शक्ति है जिसके माध्यम से ये बहिने किसी भी व्यक्ति को देखते ही या किसी का फोटो देखकर तुरन्त उसके भूतकाल का पूरा पूरा ब्यौरा दे देती है।

एक बार फाक्स बहिनें कहीं जा रही थी, और वे दोनों रेलगाड़ी में बैठी परस्पर बातों में मग्न थी, कि उनकी सामने की सीट पर बैठे हुए व्यक्ति पर नजर पड़ी, पहली ही दृष्टि में उन्हें ऐसा लगा कि यह हत्यारा है, और हत्या करने के बाद भाग रहा है।

अगले स्टेशन पर उन्होंने स्टेशन पर तैनात पुलिस

को इस बात की सूचना दी और वह हत्यारा पकड़ लिया गया, वास्तव में ही वह एक महीने पहले अपनी पत्नी की हत्या कर भाग गया था, और कहीं अता पता नहीं चल रहा था।

इसी प्रकार एक बार अमेरिका के कुबेर पति सेठ के लड़के का अपहरण हो गया था, पुलिस चारों तरफ उसे ढूंढ़ रही थी पर उसका कुछ भी पता नहीं चल रहा था।

उस सेठ ने फाक्स बहिनों को विशेष विमान से न्यूयार्क बुलाया उन्होंने उस बालक के चित्र को देखा और उनकी आंखों के सामने पूरा का पूरा भूतकाल उजागर हो गया, उन्होंने बता दिया कि वर्तमान में बालक को कहां छिपा कर रखा गया।

पुलिस ने उस स्थान पर छापा मारा और बालक को प्राप्त कर लिया गया है।

इसी प्रकार एक बार फ्रांस में उच्च कोटि के वैज्ञानिकों ने फाक्स बहिनों का परीक्षण किया, और उसे एक फोटो दे दिया गया, सामने लगभग दस बारह वैज्ञानिक जांच कर्ता बैठे हुए थे, फाक्स बहिनों ने उस फोटो को दो तीन मिनट ध्यान से देखा और फिर बताया कि यह व्यक्ति शराबी है, पेरिस के एम्पायर मौहल्ले में रहने वाला है, इसका नाम स्टीवर्ड है और इस समय यह व्यक्ति जेल में बीमार है, इसे टाइफाइड हो गया है।

वास्तव में ही ये सारे तथ्य सही थे और फाक्स बहिनों ने जो कुछ बताया था, वह अपने आप में पूर्णतः प्रामाणिक था, सभी वैज्ञानिकों ने एक स्वर से स्वीकार किया कि फाक्स बहिनों में किसी के भी भूतकाल को परखने की विशेष योग्यता है।

कैसे प्राप्त होती है, यह योग्यता

विदेश में भी नहीं भारत में भी ऐसे कई लोग है, जो किसी को भी देखकर उसके भूतकाल का सही आकंलन कर लेते है, और एक एक घटना को स्पष्ट रूप से बता देते है। इसके लिए "कर्ण पिशाचनी साधना" और अन्य कई ऐसी साधनाएं है जिनके माध्यम से भूतकाल को देखा जा सकता हैं।

परन्तु इन सबसे श्रेष्ठ और उत्तम कोटि की साधना है- "देवयानी साधना" वास्तव में ही यह अपने आप में आश्चर्यजनक और द्वितीय साधना है। इन्द्र की पत्नी देवयानी ने स्वयं इसे सिद्ध किया था और इसीलिए इस साधना को बाद में देवयानी साधना के नाम से ही जाना जाता है।

देवयानी साधना

फाक्स बहिनों से सम्पर्क स्थापित करने पर पता चला कि उन्होंने भारत में रह कर उस योगी से देवयानी साधना ही सम्पन्न की थी, जिसकी वजह से उन्हें इन भूतकालीन घटनाओं का सहज ही पता चल जाता है। यह अपने आप में इतनी प्रामाणिक और दिव्य साधना है कि इस साधना के माध्यम से व्यक्ति को श्रेष्ठ योग्यता और अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती ही है।

२०-५-८९ को देवयानी जयन्ती है, यदि साधक इस दिन साधना को सम्पन्न करते है, तो उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त होने की संभावना बनती है।

साधना रहस्य

यह मात्र तीन दिन की साधना है, शास्त्रों में कहा गया है, कि इस साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए कोई तिथि या मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है।

साधक यदि साधना करना चाहे, और यदि उसके लिए सुविधा हो तो उसे देवयानी जयन्ती के अवसर पर २०-२१-२२ मई को यह साधना सम्पन्न कर लेनी

चाहिए ।

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाय और अपने सामने किसी पात्र में "देवयानी यन्त्र" को स्थापित कर दें। यह यन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण होता है। इस यन्त्र के ऊपर तांत्रिक नारियल स्थापित करें और फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, पूजन करने के बाद सामने पांच हकीक पत्थर रख दें जो कि पूर्ण सिद्धि में सहायक है।

इसके बाद साधक एकाग्रचित्त हो कर स्फटिक माला से मंत्र जप प्रारम्भ करे, मंत्र जप से पूर्व और कोई अन्य जटिल विधि विधान नहीं है। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में नित्य तीस माला मंत्र जप होना आवश्यक है। मंत्र जप में साधक उठे नहीं, तीस माला मंत्र जप होने के बाद ही अपने आसन से उठे।

देवयानी मंत्र

ॐ देवयानी ह्रौं भूतकाले प्रत्यक्षं दर्शय फट्

यह मंत्र अत्यन्त गोपनीय और तेजस्वी है, अतः आलोचक और मूर्ख व्यक्ति को यह मंत्र साधना नहीं दी जानी चाहिए

इसी प्रकार दूसरे और तीसरे दिन भी दीपक जला कर मंत्र जप करे, तीसरे दिन मंत्र जप पूरा होने पर उस नारियल को कूट पीस कर वहीं पर पाउडर बना कर अपने पूरे शरीर पर लगा ले और यंत्र को किसी धागे में पिरो कर गले में धारण कर ले। इसके बाद स्वच्छ जल से स्नान कर ले, और कपड़े बदल कर पांचों हकीक पत्थरों को पांचों दिशाओं अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, और दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे, पांचवा हकीक पत्थर आकाश की ओर फेंक दे, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है।

मंत्र जप पूरा करने के बाद ज्यों ही यंत्र धारण किया जाता है, त्यों ही उसके शरीर में एक नवीन प्रकार की चेतना और प्रकाश सा अनुभव होता है, ऐसा लगता है कि जैसे उसके दिमाग में हजारों बातें और सैकड़ों घटनाएं परस्पर टकरा रही हों, इसके बाद परीक्षण के तौर पर साधक किसी पुरुष या स्त्री के चित्र को या उसको स्वयं को देखे और इसी मंत्र का एक या दो बार उच्चारण करे, तो उस पुरुष या स्त्री का भूतकाल पूरा का पूरा फिल्म की तरह आंखों के सामने चलने लगता है और उसके जीवन की छोटी से छोटी घटना भी स्पष्ट हो जाती है।

मेरे पिताजी ने जो कि वास्तव में ही उच्च कोटि के साधक और सन्यासी थे, उन्होंने मृत्यु से कुछ दिनों पूर्व ही इस साधना को मुझे सम्पन्न करवाया था और इसके माध्यम से मैंने देश विदेश में जो प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त किया है, उसके मूल में यह देवयानी साधना ही है, जिसे कि मैंने पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट किया है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर है। मेरी राय में प्रत्येक पत्रिका पाठक और साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए क्योंकि इस साधना की विशेषता यह है कि इस साधना में पहली बार में ही सफलता मिल जाती है।

(शेष पृष्ठ १६ का)

इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती हैं।

साधना सम्पन्न होने के बाद साधक को विचित्र अनुभव होने लगते है, जब भी वह मूल मंत्र का जप करता हैं, तो श्री हनुमान के साक्षात दर्शन हो जाते है, या वह जो भी कामना करता है, वह पूर्ण हो जाती हैं।

संत तुलसीदास जी ने भी इसी साधना को सम्पन्न कर हनुमान के साक्षात दर्शन प्राप्त किये थे और उनके माध्यम से भगवान राम के प्रिय बन सके थे। यह साधना परम योगी रामशरणदासजी से मुझे अत्यन्त गोपनीय तरीके से प्राप्त हुई थी जो कि वास्तव में ही दुर्लभ है और इस हनुमान जयन्ती के अवसर पर सभी साधकों के हितार्थ मैंने इसे पत्रिका में प्रकाशन हेतु दी है।

विश्व की सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय

सर्वथा पहली बार

कर्ण मातंगी साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना के बारे में तो भारत वर्ष के कई साधकों को जानकारी है, और कई शिष्यों ने इस साधना को सिद्ध भी किया है, कर्णपिशाचिनी साधना आज के युग में अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी साधना है।

इस साधना की विशेषता यह है, कि कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध करने पर किसी भी व्यक्ति, पुरूष या स्त्री को देखते ही उसके बारे में साधक मन ही मन जो प्रश्न पूछता है, उसका तुरन्त उत्तर साधक को उसके कान में मिल जाता है, इसीलिए इस साधना को कर्ण पिशाचिनी साधना कहते है।

यदि चमत्कार को ही नमस्कार है, तो उनके लिए 'कर्ण पिशाचिनी' साधना सर्व श्रेष्ठ साधना है, किसी मंत्री या अधिकारी को देखते ही इस साधना को सिद्ध किया हुआ व्यक्ति अपने मन में एक बार मंत्र का उच्चारण कर मन ही मन प्रश्न पूछता है कि इस सामने खड़े हुए व्यक्ति का क्या नाम है? या इसके घर का पता क्या है? अथवा इसकी पत्नी का नाम क्या है? तो देवी कर्ण पिशाचिनी साधक के कान में एक सैकण्ड में इन प्रश्नों के उत्तर दे देगी, यही नहीं अपितु यदि किसी स्त्री के बारे में उसके भूतकाल या उसकी बीती हुई घटनाओं के बारे में किसी प्रकार का कोई प्रश्न करे, तो तुरन्त उसका उत्तर मिल जाता है, कि इसका चरित्र कैसा है, इसने बचपन से लगाकर अब तक क्या क्या किया है, आदि कई ऐसी बातें है जो सर्वथा रहस्यमय होती है परन्तु इस साधना को सिद्ध करने पर साधक किसी भी रहस्य का उजागर एक ही सैकण्ड में कर लेता हैं।

और जब सामने वाला अपरिचित व्यक्ति या अधिकारी उसके जीवन के अन्तरंग क्षण या उसके जीवन की गोपनीय बातें सामने वाले के मुंह से सुनता है तो आश्चर्य चकित रह जाता है, उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता कि कोई ऐसी भी साधना है, जिसके द्वारा गोपनीय से गोपनीय तथ्य स्पष्ट हो सकते हैं, और वह सामने वाले के पैरों पर तुरन्त गिर जाता हैं, और उससे मित्रता गांठने की कोशिश करता है, उसका प्रयत्न यही रहता है, कि ऐसे व्यक्ति से मित्रता बनाये रखो, नहीं तो यह कभी भी भाण्डा फोड़ सकता है।

यहां रह कर भारत वर्ष के कई साधकों ने सफलता के साथ यह साधना सिद्ध की है, और आज वे समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण और सम्माननीय स्थान पर हैं। जब भी यहां शिविर लगते है, और सामान्य साधक जब कर्ण पिशाचिनी सिद्ध साधक को मिलते हैं, और उसके द्वारा अपने जीवन की गोपनीय घटनाओं को सुनते है तो वे भौचक्के से रह जाते है, वास्तव में ही आज के युग में कर्ण पिशाचिनी साधना एक महत्वपूर्ण साधना हैं।

पर आज मैं इससे भी सरल और गोपनीय साधना- "कर्ण मातंगी" साधना का रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि गोपनीय होने के साथ साथ तुरन्त सिद्ध

होती है, जो साधक कर्ण मातंगी साधना सिद्ध कर लेता है, वह किसी भी व्यक्ति के जीवन के अन्तरंग रहस्यों को जान लेता है, उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता, साथ ही साथ यह साधना अत्यन्त सरल और सौम्य है, कोई भी पुरूष या स्त्री इस साधना को सिद्ध कर सकता है, एक बार सिद्ध होने पर इस साधना का प्रभाव जीवन भर बना रहता है।

अब तक यह साधना सर्वथा गोपनीय रही है, यद्यपि कई तांत्रिक ग्रंथों में इसका विवरण एवं उल्लेख तो आया है, पर इसके बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिली है। इस बार पत्रिका के पन्नों पर मैं इस गोपनीय साधना के रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूँ, जिससे कि साधक इसे सम्पन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

साधना रहस्य

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है और केवल तीन दिन की साधना हैं। इस साधना में साधक को चाहिए कि वह शुक्रवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने लोहे या स्टील की थाली में "सिद्ध कर्ण मातंगी यंत्र" रख दें। यह यंत्र अत्यन्त मंत्र युक्त एव सिद्ध होना चाहिए, ऐसे यंत्र का निर्माण करने पर व्यय १९५) रू. आ जाता है, आप कहीं से भी इस प्रकार का यंत्र पहले से ही प्राप्त कर के रख ले, अथवा पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस यंत्र को मंगवा ले।

इस यंत्र को थाली के मध्य में रख कर सामने एक बड़ा सा तेल का दीपक लगावे और साधक तेल के दीपक की लौ पर दृष्टि स्थिर करते हुए "कर्ण मातंगी मंत्र" की ३१ माला मंत्र जप करे। इस साधना में हरे रंग की हकीक माला का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार तीन रात्रि प्रयोग करे, रविवार की रात्रि को जब ३१ माला मंत्र जप पूरा हो जाय तो अपने हाथों से उस तेल के दीपक को बुझा दे और दीपक में जो तेल भरा हुआ है, उसे अपने पैरों की तलहटी में लगा ले, और उसके बाद उठ कर स्नान कर लें।

स्नान करके वापिस अपने आसन पर बैठे, और गले में वह 'कर्ण मातंगी यंत्र' पहिन ले इस यंत्र में किसी भी प्रकार का धागा या चैन पिरोई जा सकती है।

इसके बाद वहीं पर बैठ कर किसी लोहे की थाली में या लोहे के पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर तेल और राई मिला कर इसी मंत्र से एक हजार आहुतियां दें।

जब आहुतियां पूर्ण हो जाय तब पुनः स्नान कर ले, और उसी आसन पर बैठ जाय। इसके बाद उस माला से पुनः तीन माला मंत्र जप सम्पन्न करे।

ऐसा करते ही, कमरे में प्रकाश सा अनुभव होता है, और सामने अत्यन्त सौम्य देवी दृष्टि गोचर होती है, जो सुन्दर होने के साथ साथ अत्यन्त सम्मोहक होती है।

वह साधक को वचन देती है, कि तुमने मुझे मन्त्र से, और यज्ञ से सिद्ध किया है, मैं जीवन भर तुम्हारे लिए उपयोगी रहूँगी और तुम जो भी प्रश्न करोगे, मैं उस प्रश्न का उत्तर तुम्हारे कान में कहूँगी।

कर्ण मातंगी मन्त्र

ऐं नमः श्री मातंगी अमोघे सत्य वादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नमः।

प्रातः काल उठकर साधक किसी कुंवारी कन्या को बुला कर उसे भोजन करावे और उसे यथा शक्ति दक्षिणा या लाल वस्त्र भेंट करे, इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है।

साधक इस साधना को अपने घर में या किसी मंदिर में अथवा कहीं पर भी सम्पन्न कर सकता है। इस साधना की विशेषता यह है कि यह तुरन्त सिद्ध होती है और असफलता के अवसर कम होते हैं। साथ ही साथ यह साधना सरल है, और इससे साधक को किसी प्रकार की परेशानी या तकलीफ नहीं होती। इससे भी बड़ी बात यह है कि आज के युग में यह साधना अत्यन्त उपयोगी है।

इसके बाद जब भी साधक इसका प्रयोग करना चाहें तब अपने गले में पहने हुए यंत्र को दाहिने हाथ से स्पर्श कर मन ही मन उपरोक्त मंत्र का चार पांच बार उच्चारण करे और कर्ण मातंगी का आह्वान करे, जब "हां" की ध्वनि प्राप्त हो तब सामने वाले व्यक्ति या सामने रखे हुए फोटो से संबधित साधक मन ही मन जो भी प्रश्न करेगा, कर्ण मातंगी साधक के कान मे तुरन्त उसका उत्तर देगी जो कि पूर्णतः प्रामाणिक और सही होगा। तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि जो साधक कर्ण मातंगी साधना को सिद्ध कर लेता है, वह पूरे त्रैलोक्य पर शासन करने में समर्थ होता है और सफलता, विजय तथा लक्ष्मी उसके सामने हाथ बांधे खड़ी रहती है। ★

कर्णपिशाचिनी को थप्पड़ मैंने मारा था

रातों रात ही प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच गया था मैं . . बड़े से बड़ा सेठ भी गिड़गिड़ाता था मेरे सामने . . यजमान वृत्ति से पेट भरने वाला मैं गरीब ब्राह्मण अब त्रिकालज्ञ माना जाने लगा था . . और फिर मैंने कहा–

- *रेल के डिब्बे में अनजान यात्री से–"तुम कत्ल करके भाग रहे हो"।*
- *एक सौम्य स्त्री से–"तुम कुल्टा हो पर पुरुष से अवैध सम्बंध है तुम्हारे"।*
- *एक निर्दोष से व्यक्ति से–"आज शाम को ही अपने मित्र की हत्या की योजना है तुम्हारी"।*
- *एक मासूम षोडशी से–"कल रात ही अपने प्रेमी के साथ तुम घर से भाग आई हो"।*
- *यह सब गोपनीय जानकारी आप भी हासिल कर सकते हैं . . . इस कर्ण पिशाचिनी साधना से . . .*

छः माह बीत चुके थे मुझे गाँव छोड़े हुए। घर की दरिद्रता से विकल होकर मैं जीवन से विरक्त हो चुका था। अक्सर मैं सोचता–"मेरे पूर्वज उच्चकोटि के ब्राह्मण थे। उनके पास अलौकिक सिद्धियाँ थीं, ज्योतिष के क्षेत्र में वे अद्वितीय थे। काल को अपने चिन्तन से उन्होंने बांध रखा था, पर आज वे विद्यायें कहाँ है?"

अपने ब्राह्मणत्व पर लांछन लगते देखना मुझे असहय था। मैंने तो निश्चय कर लिया था कि मुझे उन विशिष्ट योगियों तक पहुंचना है जिनके पास अलौकिक ज्ञान है, जिनसे मैं कुछ साधनात्मक बल प्राप्त कर सकूं।

अमरकंटक के पास विचरण करते हुऐ एक दिन मुझे श्रीमाली जी के दर्शन हो गये। कोई साधनात्मक शिविर चल रहा था। मौका देखकर मैंने उनसे भेंट की और अपनी व्यथा से अवगत कराया। मेरे ज्योतिष के प्रति रुझान को देखकर शायद उनका हृदय पसीज उठा, मुस्कुराकर बोले, "तू कर्णपिशाचिनी सिद्ध कर ले"।

पिशाचिनी का नाम सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। सुना था कि यह वाममार्गी साधना है और अत्यन्त वीभत्स तरीके से सम्पन्न की जाती है। सारे वैदिक कर्म त्याग देने पड़ते हैं और साधना खण्डित कर देने पर तुरन्त मृत्यु हो जाती है। साथ ही साथ कर्णपिशाचिनी को सिद्ध कर लेने के बाद भी उसकी कामपिपासा शान्त करनी पड़ती है और उसमें आनाकानी करने पर वह गला घोंट देती है। ये सभी कर्म मेरे पवित्र आनुवांशिक संस्कारों से भिन्न थे और मैं कल्पना में भी यह घृणित कार्य नहीं कर सकता था।

मेरे सारे संशय श्रीमाली जी भांप गये। अब उन्होंने एक नवीन रहस्य खोला, "कर्णपिशाचिनी साधना को दक्षिणमार्गी तरीके से भी सम्पन्न कर सकते हैं और यह तुम्हारी ब्राह्मण वृत्ति के अनुकूल भी रहेगा, पर इसके लिये तुम्हें सर्वप्रथम गुरु दीक्षा लेनी पडेगी।"

दीक्षा लेकर साधना रहस्यों को समझने के बाद मैं घर लौट आया और शुभ मुहूर्त में साधना आरम्भ की। घर के

एकान्त कक्ष को मिटटी और गोबर से लीपकर उस पर कुश बिछाई और मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कर्णपिशाचिनी यंत्र स्थापित कर भगवती कर्णपिशाचिती का पंचोपचार पूजन किया और फिर काली हकीक माला से निम्नलिखित मंत्र जप आरम्भ किया।

मंत्र

"ॐ हंसो हंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनी चंडवेगिनि स्वाहा"

नित्य दस हजार मंत्र जप करता था मैं। पांचवें दिन ऐसा लगा जैसे मेरे कक्ष में कोई स्त्री जोरों से हंस रही है। उसकी हंसी अत्यन्त वीभत्स थी और चूड़ियों की खनक मन में भय भी उत्पन्न कर रही थी परन्तु मैं देवी के चित्र पर नजर टिकाये मंत्र जप करता रहा।

सातवें दिन तो वह स्त्री सचमुच मेरे सामने प्रकट हो गई-लम्बे बिखरे केश, अंगरों सी आंखे, निवर्सन देह पर हड्डियों के आभूषण, मेरी चीख निकलते निकलते बची। अचानक उसने मेरे बाल मुठ्ठी में पकड़कर जोरों से झकझोर दिये। मेरी आखों के सामने तारे नाच उठे, पूरे कमरे में मरे हुए जानवर की दुर्गंध सी फैल गई। आंखे खोलकर देखा तो वह जा चुकी थी। खैर मैंने मंत्र-जप पूरा कर लिया।

साधना की नवीं रात्रि को मेरे गालों पर एक झन्नाटेदार तमाचा पड़ा। मैं संज्ञाशून्य होते-होते बचा। नजरें उठाई तो वही भयानक स्त्री खड़ी थी। कड़ककर उसने कहा, "बन्द कर यह मंत्र जप। क्या मिलेगा तुझे इससे? अब अगर यह कार्य किया तो गला दबोचकर तेरा खून पी जाऊंगी'' और वह अट्टहास कर उठी।

मेरे पुनः मंत्र जप करने पर उसने मेरे गले को पकड़ लिया। गले की नसें उभर आयीं। आंखे बाहर को निकलने लगी और पूरा शरीर काँपने लगा। मुंह से घरघराहट सी आवाज ही निकल रही थी। मृत्यु को स्पष्ट सामने अनुभव कर मैंने गुरुदेव के चरणों का स्मरण किया। तुरंत उसने हाथ हटा लिया और बाहर निकल गई।

> *कर्ण पिशाचिनी शब्द से घबराने की जरूरत नहीं है। एक सरल सौम्य एवं मधुर साधना है, जिसे कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है और जिसे सिद्ध करने पर साधक किसी भी अनजान पुरुष या स्त्री के मन के भेद जान सकता है। उसके भूतकाल की गोपनीय से गोपनीय बातें ज्ञात कर सकता है. . . और*

मेरी हिम्मत जवाब दे गयी थी। पर गुरु आज्ञानुसार मैं पुनः दसवें दिन साधना में बैठा। आज तो कमाल ही हो गया। रात्रि में लगभग दो बजे एक अतीव सुन्दरी प्रकट हुई, गुलाबी कंचुकी, गुलाबी ओढ़नी में वह सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा लग रही थी, उसके पूरे शरीर से मादक सुगंध प्रवाहित हो रही थी। एक क्षण को तो मैं विचलित हुआ पर तुरंत गुरुदेव का स्मरण हो आया कि वह कर्णपिशाचिनी हर दृष्टि से मुझे डिगाने का प्रयत्न करेगी, पर मंत्र जप नहीं तोड़ना है।

तभी उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर रख दिया और मेरे पूरे शरीर से बिजली सी दौड़ गई। उसकी मादक सुगन्ध से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हुए मैं मंत्र जप करता रहा।

आज साधना का अन्तिम दिन था, और मेरी परीक्षा का भी। मंत्र जप आरम्भ करते ही वह अप्सरा सी रूपसी सामने आ गई। आज उसने जी भर कर श्रृंगार किया था, हंसनी ग्रीवा और उन्नत वक्ष मानो आमंत्रण दे रहे थे, यौवन से भरा हुआ उसका शरीर ऐसा लग रहा था मानो कामदेव अपनी प्रत्यंचा टेढ़ी कर पूरे विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिये आतुर हो। निश्चय ही आज वह अपने रूप, यौवन और माधुर्य की त्रिवेणी ने मुझे डुबो देने को कटिबद्ध थी।

तभी उसने आगे बढ़कर मेरे गले में हाथ डाल दिया, स्पर्श होते ही जैसे मेरे पूरे रक्त में उबाल सा आ गया, मै अटक-अटक कर मंत्र उच्चारण कर रहा था। उसके शरीर की महक मेरे पूरे अंतर को मथ रही थी। मैंने गुरुदेव को स्मरण किया और अचानक मेरी विवशता क्रोध में परिवर्तित हो गयी। उस रूपसी के मेरी गोद में लेटने के बावजूद भी मैं पूरी शक्ति से मंत्रोच्चारण करने लगा।

अन्तिम माला पूरी होते होते उसने मेरे शरीर से खेलना आरंभ कर दिय, मेरे शरीर को पकड़कर कई बार भींचा, पर मैं अविचलित भाव से आसन पर स्थिर था। जप समाप्ति करते ही मेरा एक झन्नाटेदार तमाचा उस रूपसी के माल पर पड़ा।

वह सन्न रह गयी, स्वप्न में भी उसे गुमान नहीं था कि उसका सौन्दर्य इस प्रकार प्रताड़ित हो जायेगा। पर अब वह विवश थी, भीतहरिणी की भांति क्योंकि

Scanned by CamScanner

मेरी साधना अब सफल हो चुकी थी, मैंने उसे क्यों मारा, वह मेरी समझ के बाहर था शायद ग्यारह दिनों तक उसके अत्याचार सहन करने का आक्रोश ही उस तमाचे के रूप में सामने आ गया था।

अब मेरे सामने एक सौम्य स्त्री खड़ी थी। उसने मुझे आश्वस्त किया कि जब भी मैं कुछ प्रश्न पूछूंगा वह मेरा जवाब देगी और जीवन भर मेरी आज्ञाओं का पालन करेगी।

इसके बाद तो मेरा जीवन ही बदल गया आर्थिक वृद्धि तो असाधारण रूप से हुई है। किसी को भी देखते ही उसका भूतकाल मेरे सामने स्पष्ट हो जाता है और वह मुझे त्रिकालज्ञ मान बैठता है। वास्तव में ही यह एक चमत्कारी साधना है जिसे सम्पन्न कर कोई भी गृहस्थ व्यक्ति सांसारिक दृष्टि से पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

परिचय

सुभाष शर्मा, दिल्ली

निःस्वार्थ भाव से पूज्य गुरुदेव से जुड़कर इस साधक ने शिष्यत्व की सही पहिचान दी है, और आज भी चौबीसों घण्टे अनथक प्रयत्न कर गुरुभाइयों के लिये यह व्यक्तित्व जो कार्य कर रहा है, वह आशीर्वाद के योग्य है।

आपके हाथों में जिस सुन्दर सुरुचिपूर्ण तरीके से पत्रिका पहुंच रही है, उसका बहुत कुछ श्रेय शर्मा जी को है। इन्होंने खुले आम ऐलान कर रखा है कि हर हालत में मैं जुलाई तक इस पत्रिका को एक लाख तक पहुंचाकर ही दम लूंगा।